भारतेंदु हरिश्चंद्र

साहित्यिक परिचय

- **जन्म**– 9 सितम्बर, सन् 1850 ई0।
- **जन्म-स्थान** – काशी (उ0प्र0)।
- **पिता** – गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास'
- **माता** – पार्वती देवी।
- **शिक्षा** : स्वाध्याय के द्वारा विभिन्न भाषाओं का ज्ञानार्जन।
- **सम्पादन** : कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र पत्रिका, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका।
- **लेखन विधा** : कविता, नाटक, एकांकी, निब, उपन्यास, पत्रकारिता।
- **प्रमुख रचनाएँ** – प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, प्रेम प्रलाप, प्रेम सरोवर, कृष्ण-चरित्र।
- **मृत्यु** – 6 जनवरी, सन् 1885 ई0।

साहित्यिक परिचय :-

आधुनिक हिंदी गद्य के जनक माने जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद जी का जन्म 9 सितम्बर सन् 1850 ई० को काशी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ था। पिता का नाम गोपालचंद गिरिधरदास तथा माता का नाम पार्वती देवी था। 13 वर्ष की अल्पायु में इनका विवाह मन्नो देवी के साथ हो गया। वृहत् साहित्यिक योगदान के कारण 1857 ई. से लेकर 1900 ई० तक के युग को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है।

उन्होंने 1868 ई० में 'कविवचन सुधा' 1873 ई में 'हरिश्चंद मैगनीज' 1874 ई० में 'बाला बोधिनी' नामक पत्रिकाएँ निकाली। उन्होने 'तदीय समाज' की स्थापना की। इस प्रकार भारतेंदु हरिश्चंद एक सफल नाटककार, प्रतिष्ठित सम्पादक एवं कुशल लेखक के रूप में हिन्दी साहित्य संसार के समक्ष प्रकट हुए।

प्रमुख कृतियाँ-

भारतेंदु हरिश्चंद जी द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार है-

मौलिक नाटक :- वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्यं हरिश्चंद, श्री चंद्रावली, विषष्य-विषमौषधम्, अधेर नगरी इत्यादि।

अनूदिति नाटक :- विद्या सुंदर, पाखण्ड - विडम्बन, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी।

निबंध संग्रह :- नाटक, कालचक्र, लेवी प्राण लेवी, भारवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?, कश्मीर कुसुम ।

आत्मकथा :- एक कहानीः कुछ आप बीती, कुछ जग बीती ।

काव्य कृतियाँ :- प्रेम माधुरी, प्रेम मालिका, प्रेम प्रलाप, नए जमाने की मुकरी, वर्षा विनोद इत्यादि ।